

चौबीस तीर्थकरों के अर्घ्य

१. श्री ऋषभनाथ भगवान का अर्घ्य

(ताटक)

शुचि निरमल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय ।
दीप धूप फल अर्घ्य सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय ॥
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि-बलि जाऊँ मन-वच-कय ।
हे करुणानिधि! भव-दुख मेटो, यातैं मैं पूजूँ प्रभु पाय ॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

२. श्री अजितनाथ भगवान का अर्घ्य

(त्रिभंगी)

जल-फल सब सज्जै, बाजत बज्जै, गुनगन रज्जै मन मज्जै ।
तुम पद जुगमज्जै, सज्जन जज्जै, ते भव भज्जै निजकज्जै ॥
श्री अजित जिनेशं, नुतनकेशं, चक्रधरेशं खगेशं ।
मनवांछित दाता, त्रिभुवनत्राता, पूजों ख्याता जगेशं ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

३. श्री संभवनाथ भगवान का अर्घ्य

(चौबोला)

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ्य किया ।
तुमको अरपों भावभगति धर, जै जै जै शिवरमनि पिया ॥
संभवजिन के चरन चरचतैं, सब आकुलता मिट जावै ।
निज निधि ज्ञान-दरश-सुख-वीरज, निराबाध भविजन पावै ॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

४. श्री अभिनन्दननाथ भगवान का अर्घ्य

(हरिगीतिका)

अष्ट द्रव्य सँवारि सुन्दर, सुजस गाय रसाल ही ।
नचत रचत जजों चरन जुग, नाय नाय सुभाल ही ॥
कलुषताप निकन्द श्री अभिनन्द, अनुपम चन्द है ।
पदवंद वृन्द जजे प्रभु भवदन्द-फन्द निकन्द है ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

५. श्री सुमतिनाथ भगवान का अर्घ्य

(कवित्त)

जल चंदन तन्दुल प्रसून चरु, दीप धूप फल सकल मिलाय ।
नाचि राचि शिरनाथ समरचों, जय जय जय जय जय जिनराय ॥
हरिहर वंदित पापनिकंदित, सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय ।
तुम पदपद्म सदाशिवदायक, जजत मुदित मन उदित सुभाय ॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

६. श्री पद्मप्रभ भगवान का अर्घ्य

(चाल होली)

जल फल आदि मिलाय गाय गुन, भगति भाव उमगाय ।
जजों तुमहिं शिवतियवर जिनवर, आवागमन मिटाय ॥
मन-वच-तन त्रय धार देत ही, जनम जरा मृत जाय ।
पूजों भावसों, श्री पदमनाथ पद सार, पूजों भावसों ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

७. श्री सुपाश्वर्चनाथ भगवान का अर्घ्य

(चौपाई आँचलीबद्ध)

आठों दरब साजि गुनगाय, नाचत राचत भगति बढ़ाय ।
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ॥
तुम पद पूजों मन-वच-काय, देव सुपारस शिवपुरराय ।
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपाश्वर्चनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

८. श्री चन्द्रप्रभ भगवान का अर्घ्य

(अवतार)

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों ।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों ॥
श्री चंदनाथ दुति चंद, चरनन चंद लगै,
मन-वच-तन जजत अमंद, आतमजोति जगै ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

९. श्री पुष्पदन्त भगवान का अर्घ्य

(चाल होली)

जल फल सकल मिलाय मनोहर, मन-वच-तन हुलसाय ।

तुम पद पूजौं प्रीति लायकै, जय जय त्रिभुवनराय ॥

मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदन्त जिनराय ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१०. श्री शीतलनाथ भगवान का अर्घ्य

(वसंततिलका)

कंश्रीफलादि^१ वसु प्रासुक द्रव्य साजै ।

नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजै ॥

रागादि दोष मलमर्दन हेतु येवा ।

चर्चौं पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

११. श्री श्रेयांसनाथ भगवान का अर्घ्य

(हरिगीता)

जल मलय तंदुल सुमन चरु अरु दीप धूप फलावली ।

करि अर्घ्य चर्चौं चरनजुग प्रभु मोहि तार उतावली ॥

श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवनवन्द आनन्दकन्द हैं ।

दुख दन्द-फन्द निकन्द पूनचन्द जोति अमन्द हैं ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१२. श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

(जोगीरासा)

जल-फल दरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई ।

शिवपदराज हेत हे श्रीपति! निकट धरों यह लाई ॥

वासुपूज वसुपूज तनुज पद, वासव सेवत आई ।

बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१३. श्री विमलनाथ भगवान का अर्घ्य

(सोरठा)

आठों दरब सँवार, मन-सुखदायक पावने ।

जजों अर्घ्य भर थार, विमल विमल शिवतिय रमन ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१४. श्री अनन्तनाथ भगवान का अर्घ्य

(हरिगीता)

शुचि नीर चन्दन शालिशंदन, सुमन चरु दीवा धरों ।

अरु धूप फल जुत अरघ करि, कर जोर जुग विनती करों ॥

जगपूज परमपुनीत मीत, अनन्त संत सुहावनों ।

शिवकंतवंत महंत ध्यावो, भ्रन्तवन्त नशावनों ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१५. श्री धर्मनाथ भगवान का अर्घ्य

(जोगीरासा)

आठों दरब साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुन गाई ।

बाजत दृम दृम दृम मृदंग गत, नाचत ता थेई थाई ॥

परम धरम-शम-रमन धरम-जिन, अशरन शरन निहारी ।

पूजूँ पाय गाय गुन सुन्दर, नाचौँ दै दै तारी ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१६. श्री शान्तिनाथ भगवान का अर्घ्य

(त्रिभंगी)

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिंङ धारी, आनन्दकारी दृग प्यारी ।

तुम हो भवतारी, करुनाधारी, यातैं थारी शरनारी ।

श्री शान्तिजिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं ।

हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं दयामृतेशं मक्रेशं ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१७. श्री कुन्धुनाथ भगवान का अर्घ्य

(चाल लावनी)

जल चन्दन तन्दुल प्रसून चरु, दीप धूप लेरी ।

फलजुत जजन करों मन सुख धरी, हरो जगत फेरी ॥

कुन्थु सुन अरज दास केरी, नाथ सुनि अरज दास केरी ।
भवसिन्धु पस्थो हों नाथ, निकारो बाँह पकर मेरी ॥
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१८. श्री अरनाथ भगवान का अर्घ्य

(त्रिभंगी)

सुचि स्वच्छ पटीरं, गंधगहीरं, तंदुलशीरं पुष्प चरूं ।
वर दीपं धूपं, आनन्दरूपं, लै फल भूपं अर्घ्य करूं ॥
प्रभु दीनदयालं, अरिकुलकालं, विरदविशालं सुकुमालम् ।
हनि मम जंजालं, हे जगपालं, अनगुनमालं वरभालम् ॥
ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१९. श्री मल्लिनाथ भगवान का अर्घ्य

(जोगीरासा)

जल फल अरघ मिलाय गाय गुन पूजौं भगति बढ़ाई ।
शिवपदराज हेत हे श्रीधर, शरन गही मैं आई ॥
राग-दोष मद मोह हरन को, तुम ही हौ वरवीरा ।
यातैं शरन गही जगपतिजी, वेग हरो भवपीरा ॥
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

२०. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का अर्घ्य

(गीतिका)

जल गंध आदि मिलाय आठों, दरब अरघ सजों वरों ।
पूजों चरन-रज भगत जुत, जातैं जगत सागर तरों ॥
शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ मुनि गुनमाल है ।
तसु चरन आनन्दभरन तारन, तरन विरद विशाल है ॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

२१. श्री नमिनाथ भगवान का अर्घ्य

जल फलादि मिलाय मनोहरं, अरघ धारत ही भय भौ हरं ।
जजतु हौं नमि के गुन गायकें, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

२२. श्री नेमिनाथ भगवान का अर्घ्य

(चाल होली)

जल-फल आदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय।

अष्टमथिति के राजकरन कों, जजों अंग वसु नाय॥

दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय, दाता मोक्ष के॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

२३. श्री पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

नीर गन्ध अक्षतान् पुष्प चरु लीजिए।

दीप-धूप-श्रीफलादि अर्घ्य तैं जजीजिये॥

पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।

दीजिए निवास मोक्ष, भूलिए नहीं कदा॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

२४. श्री महावीर भगवान का अर्घ्य

(अवतार)

(१) जल-फल वसु सजि हिमथार, तन-मन मोद धरों।

गुण गाऊँ भवदधि तार, पूजत पाप हरों॥

श्री वीर महा अतिवीर, सन्मतिनायक हो।

जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीत)

(२) इस अर्घ्य का क्या मूल्य है अन्-अर्घ्य पद के सामने।

उस परम पद को पा लिया, हे पतित-पावन! आपने॥

सन्तप्त मानस शान्त हों, जिनके गुणों के गान में।

वे वर्द्धमान महान जिन, विचरें हमारे ध्यान में॥

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
